ऽ००

प्रकीर्णक पुस्तकमाला

चन्देल और उनका राजत्व-काल

लेखक

केशवचन्द्र मिश्र,

एम्० ए०, बी० टी०, साहित्यरत्न,

प्रथम पुरस्कार विजेता, अखिल भारतीय विक्रम सिंधिया निबंध-प्रतियोगिता, ग्वालियर, स० २०००

आचार्य, मदनमोहन मालवीय महाविद्यालय, भाटपार रानी (देवरिया)

प्रकाशक—

नागरीप्रचारिणी सभा

काशी

प्रकाशक
नागरीप्रचारिणी सभा,
काशी

प्रथम संस्करण
१००० प्रति

[मूल्य ८) रुपए]

मुद्रक
पं० पृथ्वीनाथ भार्गव,

आस्थानेषु महीभुजा मुनिजनस्थाने सतां सङ्गमे
ग्रामे पामरमण्डलीषु वणिजा वीथीपथे चत्वरे ।
अध्वन्यध्वगसकथासु निलयेऽरण्यौकसा विस्मया-
न्नित्यं तद्गुणकीर्त्तनैकमुखरा: सर्वत्र सर्वे जना ॥

(खजुराहो-पत्थर अभिलेख, यशोवर्मन्)

आमुख

भारतीय इतिहासमे चन्देलोका स्थान कई दृष्टियोसे महत्त्वपूर्ण है। विन्ध्य-मेखला और उसके जागल प्रदेशोने इतिहासके कई विकट कालोमे भारतकी राजनीतिक तथा सास्कृतिक शक्तिका गोपन, सरक्षण तथा परिवर्धन किया है। प्राचीन कालके ऐलो, चेदियो तथा वत्सोने और परवर्ती भारशिव नागो और वाकाटकोने अपनी शक्तिसाधनाके लिये विन्ध्यश्रृखला और विन्ध्याटवीका उपयोग किया था। उत्तर भारतमे जब प्रतिहारोकी शक्ति क्षीण होने लगी और पश्चिमोत्तरसे तुर्क-आक्रमण शुरू हुए तब इन्ही भू-भागोमे एक प्रबल राजनीतिक शक्तिका उदय हुआ। तुर्कोंकी शक्ति इससे टकराकर लौट गई और पश्चिमी पजाब-तक सीमिति रही। हर्षवर्धनके समयसे भारतका उत्तर और दक्षिणके रूपमे जो राजनीतिक बँटवारा हुआ था उसके कारण मध्यभारत, मध्यप्रदेश तथा विन्ध्य-प्रदेशमे प्राय सैनिक अभियान तथा राजनीतिक उथल-पुथल रहती थी। देशकी इन विश्रृखलित कडियोमें सन्धि और सतुलन स्थापित करनेमें इस नई शक्तिका बड़ा हाथ था। यह शक्ति चन्देलोकी थी। पार्वत तथा जागल प्रदेशोमें उपनिवेश तथा नगर-स्थापन, सेना तथा शासनका सगठन, कृषि तथा व्यापारका सरक्षण, जनहितके कार्य, साहित्य, कला तथा धर्मको आश्रय सभी क्षेत्रोंमें चन्देलोकी महत्त्व-पूर्ण देन है। प्रस्तुत लेखकने चन्देलोके इतिहासका प्रणयन कर भारतके एक गौरव-मय युगका उद्घाटन किया है।

मध्ययुगीन भारतमे प्रादेशिक राजवश तथा सामन्तवादी शासन ही राजनीतिक जीवनके माध्यम थे। इसके गुण-दोष तत्कालीन युगके गुण-दोष थे। परन्तु देश-कालकी सीमाके भीतर चन्देल-वशके कई राजाओने अद्भुत् राजनीतिक प्रतिभा तथा सास्कृतिक उदारताका परिचय दिया। इनमेंमे हर्ष, यशोवर्मन्, धग, गण्ड, कीर्तिवर्मन् आदिके नाम गर्वके साथ लिए जा सकते है। राजनीतिक तन्त्रोके बदलते रहनपर भी मानवका व्यक्तिगत पुरुषार्थ इतिहासकी एक बहुत बडी शक्ति है, इस सत्यका प्रतिपादन उपर्युक्त व्यक्तियोके इतिवृत्तसे पूर्णत होता है। यद्यपि राजनीतिक सिद्धान्तों और शासन-पद्धतिके विकासके क्षेत्रमे यह युग अनुपजाऊ रहा, परन्तु महान् व्यक्तियोको जन्म देनेमे इसकी उर्वरा शक्ति नष्ट नही हुई। इनके नेतृत्वमें ही समाज और राष्ट्रकी गाड़ी आगे चलती रही। प्रस्तुत ग्रथमें इस तथ्यका उत्तम न्यास हुआ है

चन्देलोका युग धर्म तथा कलाके विविध प्रयोगोकी दृष्टिसे काफी समृद्ध है। शाक्त धर्मके विभिन्न रूप, उनकी तान्त्रिक तथा वामाचारी साधना और वास्तु तथा मूर्तिकलामे उनकी अभिव्यक्ति खजुराहोके मदिर-समहोमे आज भी सुरक्षित है। शाक्त धर्म और तान्त्रिक साधनासे वैष्णव और जैन धर्म कहांतक प्रभावित हुए थे इसका पता भी खजुराहोके कलावशेषोसे लगता है। मनुष्यके सूक्ष्म दर्शनो और ऊँची आकाक्षाओका पार्थिवीकरण किन सीमातक जा सकता है, इसका निदर्शन चन्देलयुगीन कलामे मिलता है। लेखकने इतिहासकी इन प्रक्रियाओका सुन्दर विवेचन किया है।

ऐतिहासिक तथ्योके सकलन, चयन, समीक्षणमे भी लेखने सावधानीसे वैज्ञानिक पद्धतिका अनुसरण किया है। यह किसी सन्देहके बिना कहा जा सकता है कि उन्होने इतिहास-लेखनमे वैज्ञानिक और कलात्मक दोनो पक्षोका सफलताके साथ निर्वाह किया है। यद्यपि लेखककी रचनाशैली साहित्यिक है, परन्तु तथ्योकी पकडमे इससे कोई बाधा नही हुई है। प्रस्तुत ग्रथ एक सफल और सर्वाङ्गीण प्रयत्न है और इसके लिये लेखक बधाईके पात्र है।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय,
आषाढ शु० १०, स० २०११ वि०

राजबली पाण्डेय।

प्रस्तावना

प्रस्तुत पुस्तकके विषयपर लिखनेका अवसर मुझे अपनी एम० ए० परीक्षाके निबन्धमें मिला। किन्तु उस निबन्धका लक्ष्य और विश्लेषण तथा विन्यास-पद्धति दोनो सीमित और भिन्न थे। कहनेकी आवश्यकता नहीं कि उस समय अनुशीलन करते हुए इस वंशके इतिहासकी सामग्रीके अभिनव रूपने मेरे मनमें यह बात स्थिर कर दी कि इस विषयपर स्वतंत्र रूपसे विस्तृत और गभीर गवेषणा करनेकी नितान्त आवश्यकता है। विस्तृत और मौलिक योजना-सूत्रके आधारपर यह कार्य आजसे आठ वर्ष पूर्व आरभ कर दिया गया। अर्वाचीन इतिहासकारोकी तद्विषयक कृतियोंके व्यापक अध्ययनके पश्चात् मूल साधनोके माध्यमसे चन्देल इतिवृत्तके सूक्ष्मतम अवयवोको व्यक्त करनेकी सामग्रीका सकलन किया गया। किंतु इस विषयका शोधकार्य वर्तमान विध्यप्रदेशकी विस्तृत ऐतिहासिक यात्रा बिना कदापि पूर्ण नहीं हो सकता था। अतएव क्रमसे मुझे तीन यात्राएं करनी पड़ीं, जिनके फलस्वरूप प्रकाशित जनश्रुतियोंको प्रमाणित तथा मूल्यवान छूटी हुई जनश्रुतियोको सकलित किया जा सका। इसके अतिरिक्त अगमिक और अन्य अप्रकाशित चारण-साहित्योंकी हस्तलिखित प्रतियोंका अवलोकन किया जा सका। अपार चन्देल वास्तु और मूर्तिकलाके प्रत्यक्ष अध्ययन-द्वारा उनके अन्तर्निहित रहस्योंतक पहुँचनेका अलभ्य अवसर भी प्राप्त हुआ।

सार्वभौम चन्देल शासकोंके वर्तमान युगतकके परवर्ती इतिहासकी सामग्रीको समस्या और भी विकट थी। किन्तु गिद्धौरके राजकीय आलेख और कुछ सुरक्षित प्रामाणिक साधनो और वहाँकी ऐतिहासिक यात्राओंने इस कार्यको यथासभव सुसाध्य बना दिया। इन उपक्रमोंने प्रस्तुत मौलिक रचनाके लिये अपेक्षित सामग्री सभी प्रकारसे पूरी कर दी। इसके अतिरिक्त ग्रंथ लिखते समय विवादपूर्ण स्थलोंके संबंधमें वर्तमान अनेक अधिकारी विद्वानोसे नि.सकोच विचार-विनिमय करके सत्यान्वेषणके कार्यको परिपुष्ट करनेका मैंने प्रयत्न किया।

इस विषयपर विशेषतया चन्देल वास्तु और मूर्त्तिकलापर विस्तृत अध्ययन करके स्वतंत्र और प्रामाणिक ग्रंथ लिखनेकी प्रेरणा मुझे सन् १९४६ में भारतीय सघके गृहमन्त्री माननीय डा० कैलासनाथ काटजूने उचित परामर्शके साथ दी। उनकी पावन शुभेच्छा ही यहाँ मूर्तिमान हुई है।

मेरी कक्षा-अवस्थासे अबतक मेरे पूरे शोधकार्यके सूत्रधार परम पूज्य गुरुवर्य डा० राजबलीजी पाण्डेय, अध्यक्ष, प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति विभाग तथा प्रिन्सिपल, कौलेज औफ़ इण्डोलौजी, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय हैं, जिनके अमूल्य निर्देशोंने इस कार्यको सरल एवं दीप्तिपूर्ण कर दिया। उन्होंने ग्रंथके सम्बन्धमें कुछ

पंक्तियाँ लिखनेका अनुग्रह करके मुझे और भी ऋणी बना दिया। मैं उनके प्रति अपनी विनीत श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता हूँ।

मेरे परम श्रद्धेय गुरुवर्य, आचार्य पं० सीतारामजी चतुर्वेदीने सांस्कृतिक अध्यायोंके संबंधमें अनेक मार्मिक परामर्श दिए और इस ग्रंथकी स्वरूप-रचना और प्रकाशनमें अपने सहज कृपालु स्वभावसे अपना व्यस्त और मूल्यवान समय देकर मेरे प्रति जो प्रगाढ़ स्नेह दर्शाया, वह अकथनीय है। मैं उनका अभिनन्दन करता हूँ और हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। इतिहासविद् श्रीभगवतशरणजी उपाध्यायका भी मैं आभारी हूँ, जिन्होंने अपने सुझावोंसे अनुगृहीत किया। बुन्देलखण्डके अनेक इतिहास-प्रेमियोंने जनश्रुति-संकलन, हस्तलिखित आल्हाखण्डकी प्रतियों तथा चित्रोंको प्राप्त करने और यात्राकी व्यवस्थामें उदारतासे सहयोग दिया। मैं उन सबके प्रति आभार प्रगट करता हूँ—विशेषतया लीडर प्रेस, प्रयागके सहसम्पादक श्री जितेन्द्रसिंह और छतरपुरके "विन्ध्याचल" साप्ताहिकके संचालक श्री सुरेन्द्रकुमार जैनके प्रति।

बिहारका गिद्धौर राजवंश अपने परम्परा-विश्रुत साहित्य, कला-प्रेम और उसके संरक्षणके लिये सर्वदासे विख्यात रहा है। जिस प्रथित वंशका इतिहास इस ग्रंथमें प्रस्तुत किया गया है, उसका गिद्धौर गौरवपूर्ण उत्तराधिकारी है। वंशके प्राचीन अज्ञात वैभवको प्रकाशमें लानेकी उद्दाम लालसा आज भी गिद्धौर राज्यकी वर्त्तमान माननीया श्रीमती राजमाता साहिबाके हृदयमें संरक्षित है। इस ग्रंथकी चर्चा जब उनके सामने आई तब सहज निष्ठा एवं उदारतासे उन्होंने इसके प्रकाशन-व्ययका भार ग्रहण कर लिया। उनकी इस धारणामें आयुष्मान् राजकुमार प्रतापसिंहजी बहादुरका कुल-शील भी अभिव्यक्त हुआ। फलस्वरूप यह ग्रंथ उचित गौरवके साथ आज प्रकाशित हुआ है। मैं आप लोगोंकी इस आर्ष भावनाके लिये साधुवाद देता हूँ और उदारताके प्रति हृदयसे कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

इस विषयपर अभीतक भारतीय भाषाओं अथवा अंग्रेजी भाषामें स्वतंत्र खोजके साथ कोई ग्रंथ प्रकाशित नहीं हुआ था। राष्ट्रभाषाके माध्यमसे इस अभावकी पूर्त्ति करनेका मेरा विचार आज पूर्ण हुआ। "नागरीप्रचारिणी सभा," काशीने अपने आदर्शोंके अनुकूल अपने प्रकाशनमें इस ग्रंथको सम्मिलित किया, इसके लिये "सभा" के वर्त्तमान अधिकारी-वर्गको धन्यवाद देता हूँ।

अन्तमें अपने प्रिय मित्र और सहयोगी श्री भरत मिश्र, उपाचार्य, मदनमोहन मालवीय कौलेज, भाटपाररानीके प्रति आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने बड़े श्रमके साथ पाण्डुलिपि और अनुक्रमणिका तैयार करनेमें समय दिया।

आषाढ़ शुक्ल, २ सम्वत् २०११
रथयात्रा, काशी

केशवचन्द्र मिश्र, एम्० ए०,
आचार्य मदनमोहन मालवीय कौलेज,
देवरिया

विषय-सूची